REVIEW OF RESEARCH
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF) UGC APPROVED JOURNAL NO. 48514 ISSN: 2249-894X
VOLUME - 8 | ISSUE - 6 | MARCH - 2019

राष्ट्रकवि दिनकर के निबंधों में धर्म और विज्ञान

हेमलता प्रजापति[१] , डॉ. रेखा दुबे[२]
[१]शोधार्थी हिन्दी विभाग डॉ. सी.वी. रमन युनिवर्सिटी, कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)
[२]शोध निर्देशक, विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, डॉ सी.वी. रमन युनिवर्सिटी कोटा, बिलासपुर (छ.ग.)

सारांश :

आधुनिक विज्ञान की शुरूआत से पहले मनुष्य अधिक कल्पनाशील था। जैसे बच्चों का मन अधिक कल्पनाशील होता है उनकी कल्पना में हाथी गुलाबी और हरे रंग का भी होता है तोता पीले रंग का भी हो सकता है लेकिन बड़े ऐसी कल्पना नहीं करते। विज्ञान के विकास के साथ वही बातें मान्य होने लगीं जिसकी पुष्टि विज्ञान कर सके। लेकिन जैसे—जैसे विज्ञान अपनी ऊँचाई को छूने लगा मनुष्य को उसकी सीमाओं का भी ज्ञान होने लगा। विज्ञान मनुष्य को पूरी तरह समझने में सफल नहीं हुआ क्योंकि मनुष्य केवल सनसनाहटों का पुंज नहीं है, वह अपना प्रत्येक कार्य परिस्थितियों से चालित होकर नहीं करता।बोर के सापेक्ष्यवाद और क्वांटम के सिद्धान्तों ने यह स्थिति उत्पन्न कर दी है कि वैज्ञानिक भी धर्म की सम्भावनाओं में विश्वास कर सकें । दिनकर मानते हैं कि मनुष्य की उन्नति का जो चरम सोपान है वहाँ तक हमें बुद्धि नहीं केवल भावना ले जाती है। अत: मनुष्य के लिए विज्ञान के साथ—साथ अध्यात्म का अवलंब भी आवश्यक है।

वर्तमान युग में हर व्यक्ति, विशेषकर युवाओं के मन में धर्म को लेकर कई सवाल उठते हैं।लोगों ने विज्ञान का अध्ययन किया हो या ना किया हो किन्तु हर मनुष्य के पास जो सामान्य तर्कबुद्धि है, वह हर जगह, हर घटना के पीछे कार्य—कारण सम्बन्ध खोजने का प्रयास करती है और जहाँ मनुष्य का मस्तिष्क किसी कार्य के होने के पीछे के कारण को समझ लेता है उस बात को या उस कार्य को आसानी से स्वीकार कर लेता है किन्तु धर्म या अध्यात्म इतना स्थूल नहीं है कि उसे किसी सिद्धान्त या निश्चित कार्य—कारण समीकरण के अनुसार समझा जा सके। यही कारण है कि एक ओर विज्ञान की सीमाओं और सम्भावनाओं को वैज्ञानिकों द्वारा दिये गए सिद्धान्तों से समझना आसान है जबकि धर्म को समझना जरा मुश्किल।

बहुत से महापुरूषों के जीवन को या साहित्यकार यहाँ तक कि सामान्य लोगों के जीवन में भी जीवन काल के उत्तरार्ध में धर्म और अध्यात्म की ओर झुकाव बढ़ता है क्योंकि किशोरावस्था मनोविज्ञान के आविष्कारों को देखकर अभिभूत होता है और हर चीज को वैज्ञानिक दृष्टि से देखता है, तब उसे लगता है कि विज्ञान से सृष्टि के हर पहलू को समझा जा सकता है, परन्तु जैसे—जैसे जीवन गहन अनुभवों से गुजरता है उसके सामने ऐसे—ऐसे रहस्य आते हैं जिन्हें विज्ञान द्वारा नहीं समझा जा सकता । राष्ट्रकवि रामधारी सिंह ▪ दिनकर▪ ने भी शायद इस बात की आवश्यकता समझी कि भारतीय धर्म—दर्शन को अगर वैश्विक स्तर पर समझाना हो, तो उसे विज्ञान के साथ सम्बद्ध करके समझाना होगा

क्योंकि सिर्फ धर्म की बात करने पर लोगों को ऐसा लगता है कि इस व्यक्ति को विज्ञान और तर्क क्षमता का कोई ज्ञान नहीं है इसलिए दिनकर ने अपने निबंध ▪ धर्म और विज्ञान▪ में बहुत वैज्ञानिक तरीके से धर्म और विज्ञान के संबंध को पाठकों तक पहुँचाया है। विज्ञान के विकास के साथ—साथ धार्मिक मान्यताओं में किस प्रकार बदलाव आया इसे बड़े तार्किक ढंग से दिनकर ने स्पष्ट किया है।

मानव संस्कृति में ▪ धर्म▪ प्राचीन काल से जुड़ा है और भारतीय संस्कृति का तो आधार ही धर्म है। जबकि विज्ञान का आविर्भाव बहुत बाद में हुआ है। दिनकर के शब्दों में—▪ विज्ञान के आर्विभाव से पूर्व समाज पर धर्म और दर्शन का प्रभुत्व था और धर्म के साथ अनेक प्रकार के अंधविश्वास भी मनुष्यों के मन में छाये हुए थे। इसलिए आरम्भ के वैज्ञानिकों में हम शुद्ध विज्ञान के दर्शन नहीं करते। कोपरनिकस(१४७३—१५४३ई.), गैलीलियो(१५६४—१६१२ई.) और केपलर(१५७१—१६३०ई.) ये विज्ञान के प्रवर्तकों में से हैं, किन्तु उनकी खांटी वैज्ञानिक दृष्टि नहीं थी।[१] आधुनिक विज्ञान की शुरूआत न्यूटन से माना जाता है जिनका उदय १६४२ ई. में हुआ। न्यूटन भी ईश्वर पर विश्वास करते थे। किन्तु उनको अपने गुरूत्वाकर्षण और गति के नियमों पर भी अटल विश्वास था। दिनकर कहते हैं—▪ न्यूटन आस्तिक थे और उनके समकालीन वैज्ञानिक भी ईश्वर की आवश्यकता का अनुभव करते थे किन्तु फ्राँस के दार्शनिकों ने जब यह देखा कि प्रकृति की क्रियाएँ विज्ञान से भलीभाँति समझी जा सकती हैं, तब उन्होंने ईश्वर की आवश्यकता पर से अपनी दृष्टि हटा ली।▪ [२]पहले मनुष्य मुक्त रूप से सोचा करता था उसमें कल्पनाशीलता थी किन्तु जैसे—जैसे विज्ञान का विकास हुआ यह बात आने लगी कि विचारधारा तो वही मान्य होगी, जिसकी पुष्टि विज्ञान करेगा।

धर्म की ओर से विमुख होने का और विज्ञान की ओर झुकाव के पीछे भी कई कारण हैं जिसमें से एक है धर्म का विकृत रूप जो अंधविश्वास और बाह्य आण्डबरों को बढ़ावा देता है। एक ओर विज्ञान भौतिकवाद को बढ़ावा देता है वहीं दूसरी ओर धर्म, निवृत्ति की भावना को किन्तु दिनकर निवृत्ति की भावना की अधीकता कोभी घातक मानते हैं। ▪ प्रवृत्ति और निवृत्ति, ये धर्म की राजनीति हैं, जैसे इलियट ने क्लासिसिज्म और रोमांटिसिज्म को साहित्य की राजनीति कहा है फिर भी, यह ठीक है कि प्रवृत्ति की अधिकता मनुष्य को लोभी और परपीड़क बना देतीहै। इसी प्रकार निवृत्ति की अधिकता से मनुष्य निर्धन और अत्याचार सहने योग्य हो जाता है।▪ [३]न्यूटन के सिद्धान्तों पर आधारित विज्ञान १९वीं सदी के अन्त तक बिना विरोध के माने जाते रहे किन्तु लगभग १८९० ई. के बाद जो नए अनुसंधान हुए उससे विज्ञान की मान्यताएँ कमजोर पड़ने लगी और भौतिकवाद में जो आक्रामकता आ गई थी उसमें भी शिथिलता आने लगी।

दिनकर जी ने कई गणित और भौतिकी के अनुसन्धानों को बड़ी बारिकी से समझकर, जिसमें भौतिकी के कण और तरंग सिद्धान्त, फोटो—विद्युत—इफेक्ट, तरंग—चित्र का उपयोग, प्रकाश—इफेक्ट आदि शामिल हैं इनका अध्ययन करने के बाद दिनकर कहते हैं—▪ विज्ञान के अहंकार को सबसे बड़ी ठेस यह लगी है कि कारण—कार्य (कौजल्टी) का जो सिद्धान्त द्रव्य के सभी रूपों के विश्लेषण में उतना अधिक सफल पाया गया था, वह इलेक्ट्रोन के विश्लेषण में झूठ हा गया है। नि:सग परमाणु और इलेक्ट्रान— ये दोनों ऐसे आचरण करते हैं, मानों व स्वेच्छाचारी और स्वाधीन हों।▪ [४] आगे दिनकर जी कहते हैं कि हैं ▪ जब धर्म ने यह कहा कि विश्वास से पहाड़ भी हिल सकते हैं, तब इस बात पर किसी ने भी ध्यान नहीं दिया। किन्तु जब विज्ञान यह कहता है कि परमाणु से पहाड़ उखाड़े जा सकते हैं, तब सभी को उसका विश्वास हो जाता है।▪ [५]जैसे—जैसे भौतिकी का विकास होता गया उसक हाँथ की ठोस चीजें गायब होती गई । जो ठोस था, वह गलकर शून्य हो गया है और हम आकार का हिसाब निराकार के पट पर लिख रहे हैं। पंडित नेहरू के शब्दों में ▪ ▪ ठोस दुनिया पिघलकर गणित का कोई विचार अथवा छलना बन गई है, जो माया—सिद्धान्त के बहुत ही समीप है।▪ ▪

जैसे—जैसे मनुष्य का ज्ञान बढ़ता है उसकी दृष्टि विशद होने लगती है जिस प्रकार छिछले पानी में खड़े होकर हमें लगता है हमने जल के रहस्य को जान लिया लेकिन समुद्र की अथाह गहराई पर जाकर हमारी सोंच बदल जाती है। दिनकर कहते हैं—▪ विज्ञान की नई प्रवृत्तियाँ हमें जिस ऊँचाई पर ले गई हैं,

वहाँ से दर्शन का समुद्र दिखाई देने लगा है। आइंस्टीन, हेजनबर्ग और बोर के सापेक्ष्यवाद और क्वांटम के सिद्धन्तों ने पिछले बीस वर्षों के भीतर यह स्थिति उत्पन्न कर दी है कि वैज्ञानिक भी धर्म की सम्भावनाओं में विश्वास कर सकें। भौतिकी के दार्शनिककों को चाहिए कि भौतिकी से आगे अब वह उस भूमि का संधान करे, जो भूत और अध्यात्म की सीमा पर पड़ती है।▪ [६]

दिनकर जी ने धर्म–दर्शन पर अलग से भी बहुत कुछ लिखा है। और उन पहलुओं पर भी प्रकाश डाला है जिनके कारण हिन्दू–धर्म की आलोचाना होती है। जैसे–हिन्दू–धर्म पर परलोक को ज्यादा अच्छा समझने और परलोक को सुधारने के लिए जिन्दगी के संघर्षों से भागने का आरोप लगता है, इस पर दिनकर जी कहते हैं–▪ हिन्दू–धर्म पर यह लाँछन शायद इसलिए लगाया जाता है कि भारतवर्ष में योगियों, साधु या संन्यासी हो जाते थे, वे किसी भी तरह का संचय नहीं करते थे, न वे समाज में फैले हुए अन्याय का विरोध करते थे। हिन्दुओं के बीच सबसे श्रेष्ठ मनुष्य राजे या सेठ नहीं, बल्कि वे लोग समझे जाते थे, जो अपनी मुक्ति खोजने के लिए संसार का त्याग कर देते थे। किन्तु, संसार से भागने का यह रिवाज आर्यों के आदि धर्म में नहीं था। आर्यों के आदि धर्म यानी वैदिक धर्म में प्रधानता संन्यास की नहीं, बल्कि गृहस्थ धर्म की थी।▪ [७]

दिनकर जी तिलक के गीतारहस्य से बहुत अधिक प्रभावित थे क्योंकि गीता वैसे तो ज्ञान–मार्ग का भी ग्रंथ है। लेकिन उसका असली जोर कर्मयोग पर है। गीता की यह शिक्षा है कि आततायी लोगों के अन्याय को सहते जाना पुण्य नहीं, पाप है। संसार संघर्ष की भूमि है। धरती पर विजय उन्हें मिलती है, जो वीर हैं, जो कर्मठ अध्यवसायी और निर्भीक हैं। दिनकर जी ऐसा मानते हैं कि बौद्ध धर्म और जैन धर्म के प्रभाव से धीरे–धीरे हिन्दू–धर्म में एक निराशा सी फैल गई थी जिसे स्वामी विवेकानन्द ने मिटाया उनके शब्दों में–▪ पस्ती और निराशा की कालिमा को धोकर हिन्दू–धर्म को फिर से चमकाने का काम स्वामी विवेकानन्द ने किया। वे परमहंस श्रीरामकृष्ण के शिष्य और महाकाली के उपासक थे। अपने सैकड़ों व्याख्यानों के द्वारा उन्होंने हिन्दुओं के मन पर से इस भाव को धो–पोंछकर दूर कर दिया कि धर्म की साधना वैयक्तिक मोक्ष के लिए की जाती है। उलटे, लोगों को उन्होंने यह समझाया कि धर्म की असली साधना का मार्ग समाज की सेवा का मार्ग है, राष्ट्र की उन्नति का मार्ग है, संघर्ष में ताल ठोंककर जूझने का मार्ग है।▪ [८]

हिन्दू–धर्म की यह विशेषता रही है कि इसने अपने अंदर अनेक परिवर्तनों को पचा लिया है।कई बार बाह्य आक्रमणों को झेलकर इसकी ताकत और भी बढ़ गई है। इसलिए दिनकर हिन्दू–धर्म के द्वारा तथा भारतीय संस्कृति के द्वारा पूरे विश्व को नई दिशा देने का सामर्थ्य देखते हैं। ▪ नया हिन्दुस्तान केवल धर्म ही नहीं, विज्ञान का भी प्रेमी है। हमें केवल परलोक ही नहीं, यह लोक भी चाहिए। हम आत्मा और शरीर, दोनों के लिए पूरा आहार चाहते हैं। धर्म की साधना बहुत अच्छी चीज है, लेकिन साधुओं के भीतर भी यह शक्ति होनी चाहिए कि वे सरहद के भीतर घुसने वाल शत्रु की गरदन काट सकें।▪ [९]

विज्ञान मनुष्य को पूरी तरह से समझने में सफल नहीं हुआ है क्योंकि वास्तविकता केवल उतना नहीं है जितना दिखाई देता है। और यह अच्छा ही हुआ क्योंकि विज्ञान ने जिस हद तक मनुष्य को जाना था उसमें मनुष्य का स्थान अत्यंत तुच्छ हो जाता, क्योंकि वह स्वयं को कारण–कार्य नियम के उतना ही अधीन समझता जितना कोई भी पशु अथवा पेड़–पौधा। दिनकर के अनुसार–▪ केवल इलेक्ट्रान ही नहीं, मनुष्य भी नियतिवाद का अपवाद है। वह अपना प्रत्येक कार्य परिस्थितियों से चालित होकर नहीं करता, बहुत बार निर्णय उसके अपने हाँथ में होता है। विकास की प्रक्रिया अब पेंड़–पौधों और पशुओं में नहीं चलती।उसका एकमात्र क्षेत्र अब मनुष्य की मनोभूमि है।▪ [१०]

दिनकर जी वर्तमान शिक्षा पद्धति में विशेषज्ञता से ज्यादा ऐसे मनुष्य तैयार करने पर बल देते हैं जो विज्ञान और धर्म दोनों के प्रति सहानुभूतिशील हों जो कला प्रेमी होने के साथ–साथ विज्ञान प्रेमी भी हो, जिन्हें अध्यात्म पर चर्चा करने में भी रूचि हो और वैज्ञानिकों की महफिल में भी खुद को बेगाना न महसूस करें। उनके शब्दों में–▪ दुनिया की मैनेजरी बुद्धि ने ले ली है, यह बहुत अच्छी बात है किन्तु मनुष्य की उन्नति का जो चरम सोपान है वहाँ तक हमें बुद्धि नहीं केवल भावना ले जाती है।▪

अत: हम यह निष्कर्श निकाल सकते हैं कि जहाँ एक ओर आधुनिक जगत कें साथ चलने को वैज्ञानिक दृष्टिकोण आवश्यक है वहीं मनुष्य की आंतरिक शान्ति के लिए धर्म का अवलंब भी जरूरी है।

संदर्भ

१. दिनकर रचनावली, भाग—८, सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार लोक भारती प्रकाशन, पहला संस्करण: २०११/पृ.—१३८
२. दिनकर रचनावली, भाग—८, सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार लोक भारती प्रकाशन, पहला संस्करण: २०११/पृ.—१४०
३. 'वेणुवन'/दिनकर रचनावली, भाग—८/सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार/पृ.—१०८
४. 'विवाह की मुसीबतें'/दिनकर रचनावली—८/सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार/पृ.—१४८
५. 'विवाह की मुसीबतें'/दिनकर रचनावली—८/सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार/पृ.—१४०
६. 'लौकिकता और हिन्दू—धर्म'/दिनकर रचनावली—८/सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार/पृ.—१०३
७. वही, पृष्ठ—१०६
८. वही, पृष्ठ—१०७
९. 'धर्म और विज्ञान'/दिनकर रचनावली—८/सं. नंदकिशोर नवल, तरूण कुमार/पृ.—१५३
१०.'इल्म की इन्तिहा है बेताबी'/दिनकररचनावली—८/सं. नंदकिशोरनवल, तरूण कुमार/पृ.—१८